بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail :ansarullah@qadian.in Khulasa Khutba-18.02.2022 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

पेशगोई मुस्लेह मौऊद के पूरा होने के सम्बंध में विभिन्न आयामों के बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के कथनों के प्रकाश में ईमान वर्धक वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 18 फ़रवरी 2022, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद, टिलफ़ोर्ड यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم ۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस्लाम के दुशमनों की इस आपत्ति पर कि इस्लाम कोई निशान नहीं दिखाता, ख़ुदा तआला से सूचना पा कर इस्लाम की सत्यता के बारे में एक बड़े निशान के रूप में एक निश्चित अवधि में लगभग बावन तरेपन विशेषताओं से सुशोभित अपने एक बेटे के जन्म की भविष्यवाणी के विषय में घोषणा फ़रमाई जो न केवल उस अवधि में पैदा हुआ अपितु उसने लम्बी आयु भी पाई तथा उसे इस्लाम की बहुमूल्य सेवा का अवसर भी मिला। इस भविष्य वाणी को हम हर साल 20 फ़र्वरी को पेशगोई मुस्लेह मौऊद रज़ी. के संदर्भ में याद रखते हैं। इसके विभिन्न आयामों पर जमाअती जलसों में प्रकाश डाला जाता है तथा एम टी ए पर भी प्रोग्राम आते हैं।

पेशगोई के अनुसार लम्बी आयु पाने वाले इस बच्चे के स्वास्थ्य की दशा के बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि बचपन में मेरा स्वास्थ्य अत्यंत दुर्बल था, पहले काली खांसी हुई फिर स्वास्थ्य इतना गिर गया कि गयारह बारह साल की आयु तक जीवन मृत्यु के संघर्ष में लिप्त रहा, दृष्टि कमज़ोर हो गई, छः सात महीने तक मुझे बुख़ार आता रहा, टी बी का रोग घोषित कर दिया गया, इन कारणों से नियमानुसार शिक्षा प्राप्त नहीं कर सका, पायः स्कूल से ग़ायब रहता, कौन ऐसी अवस्था में लम्बी आयु के बारे में सुनिश्चित कर सकता है, ऐसी स्थिति में कौन कह सकता है कि ये ज्ञान भी उसको मिलेंगे। आप

रज़ी. फ़रमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने फ़रमाया कि क़ुर्आन तथा हदीस पढ़ लेगा तो समझो कि पर्याप्त है। कहते हैं कि अतएव मेरा स्वास्थ्य इतना दुर्बल था कि दुनिया की शिक्षा पाने के विषय में पूर्णतः अयोग्य था, मेरी नज़र भी कमज़ोर थी, मैं प्राईमरी मिडिल तथा इन्ट्रेंस की परीक्षा में फ़ेल हुआ हूँ, किसी परोक्षा में पास नहीं हुआ।

आप रज़ी. फ़रमाते हैं कि ख़ुदा ने मेरे सम्बंध में सूचना दी थी कि मैं प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष ज्ञान से परिपूर्ण किया जाऊँगा। अतः बावजूद इसके कि सांसारिक विद्याओं में से कोई विद्या मैंने नहीं पढ़ी अल्लाह तआला ने ऐसी महान पुस्तकें मेरे क़लम से लिखवाईं कि दुनिया यह मानने के लिए विवश है कि इनसे बढ़कर इस्लाम की शिक्षाओं के सम्बंध में और कुछ नहीं लिखा जा सकता। क़ुर्आन करीम की व्याख्या का एक भाग तफ़सीरे कबीर के नाम से लिखा जिसे पढ़ कर बड़े बड़े विरोधियों ने भी स्वीकार किया कि इस जैसी तफ़सीर आजतक कोई नहीं लिखी गई।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि मैं अभी बच्चा ही था कि सपने में एक फ़रश्ते ने सूरः फ़ातिहः की तफ़सीर सिखानी शुरु की और जब वह اِيَّاكَ نَعۡبُدُ وَاِيَّاكَ نَسۡتَعِيۡنُ ۝ पर पहुंचा तो कहने लगा कि आजतक जितने व्याख्याकार हुए हैं उन सबने केवल इस आयत तक तफ़सीर लिखी है परन्तु मैं तुम्हें इसके आगे भी व्याख्या सिखाता हूँ। अतः उसने पूरी सूरः फ़ातिहः की तफ़सीर मुझे सिखा दी। इस सपने का अभिप्रायः वास्तव में यही था कि क़ुर्आन के बोध की क्षमता मुझमें रख दी गई। आप रज़ी. ने दुनिया को चुनौती दी कि यह क्षमता मेरे भीतर इतनी अधिक है कि मैं दावा करता हूँ कि सूरः फ़ातिहः से ही मैं सम्पूर्ण इस्लाम की शिक्षा बयान कर सकता हूँ।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. बयान करते हैं कि हमारे स्कूल की फ़ुटबाल टीम को अमृतसर में मैच जीतने पर एक सेठ ने दावत दी, जहाँ मुझे तक़रीर करने के लिए खड़ा कर दिया गया। मेरी दुआ पर ख़ुदा तआला ने सूरः फ़ातिहः के विषय में मेरे दिल में एक विचार डाला और मैंने कहा देखो क़ुर्आन करीम में अल्लाह तआला ने यह दुआ सिखाई है कि غَيۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَيۡهِمۡ وَلَا الضَّآلِّيۡنَ ۝ में غَيۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ का अभिप्रायः है कि हम यहूदी न बन जाएँ, तथा وَلَا الضَّآلِّيۡنَ का अभिप्रायः यह है कि हम नसारा न बन जाएँ। इसकी और अधिक व्याख्या इस लिए भी होती है कि रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इस उम्मत में एक मसीह आएगा, जो लोग उसका इंकार करेंगे वे यहूदियों के समान हो जाएँगे तथा कुछ लोग अपने धर्म की शिक्षा को न समझ कर ईसाइयत धर्म स्वीकार कर लेंगे। आश्चर्य जनक बात यह है कि सूरः फ़ातिहः मक्का में अवतरित हुई तथा उस समय सबसे अधिक विरोध मक्का मं बुतों के पूजन वालों की ओर से किया जाता था, परन्तु दुआ यह नहीं सिखाई गई कि इलाही हम बुतों को पूजने वाले न बन जाएँ, बल्कि यह दुआ सिखाई गई कि इलाही हम यहूदी अथवा नसारा न बन जाएँ। अर्थात अल्लाह तआला ने यह पेशगोई फ़रमा दी थी कि मक्का क बुत पूजक सदा के लिए मिटा दिए जाएँगे और यहूदियत तथा इसाईयत शेष रहेंगी जिसके बिगाड़ से बचने के लिए सदैव यह दुआ करना अनिवार्य होगा। जब मेरी तक़रीर हो चुकी तो बाद में बड़े बड़े लोग कहने लगे कि आपने क़ुर्आन ख़ूब पढ़ा हुआ है। हमने तो

अपनी पूरी आयु में यह विचार पहली बार सुना है। अतः वास्तविकता यही है कि सारी तफ़सीरों को देख लो, किसी क़ुर्आन के टीकाकार ने आजतक यह विचार बिन्दु बयान नहीं किया, जबकि मेरी आयु उस समय लगभग बीस वर्ष थी जब अल्लाह तआला ने मुझ पर इस विचार बिन्दु का भेद खोला।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि मैं ग्यारह साल का था कि मेरे दिल में यह विचार उत्पन्न हुआ कि मैं ख़ुदा तआला पर क्यूँ ईमान लाता हूँ, उसके अस्तित्व का प्रमाण क्या है? मैं देर रात तक इसके बारे में सोचता रहा, अंततः दस ग्यारह बजे मेरे दिल ने निर्णय लिया कि हाँ एक ख़ुदा है। वह मेरे लिए प्रसन्नता की घड़ी थी कि मेरा पैदा करने वाला मुझे मिल गया, सुना हुआ ईमान चेतना के ईमान से बदल गया। मैं अल्लाह तआला से एक लम्बे समय तक दुआ करता रहा कि ख़ुदाया मुझे तेरे अस्तित्व के विषय में कभी सन्देह न हो, आज मैं पैंतीस साल का हूँ अब मैं और अधिक चाहता हूँ कि ख़ुदाया मुझे तेरे अस्तित्व के विषय में सत्यनिष्ठ विश्वास उत्पन्न हो। आप रज़ी. फ़रमाते हैं कि जब ख़ुदा तआला का वजूद मुझ पर प्रकट हो गया तो फिर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई भी मुझ पर स्पष्ट हो गई। अतएव यह भी एक प्रमाण है अल्लाह तआला का आप रज़ी. के ज्ञान को परिपूर्ण करने का।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ी. यही समझते थे कि यह बच्चा मुस्लेह मौऊद की पुष्टि करने वाला बनेगा। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने तशह़ीजुल अज़हान नामक रिसाले का परिचय कराने हेतु उसके लक्ष्य एवं उद्देश्य के बारे में एक निबन्ध लिखा जिसकी हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ी. ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के समक्ष विशेष प्रशंसा की परन्तु बाद में व्यक्तिगत रूप से हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. को फ़रमाया कि मियाँ तुम्हारा निबन्ध बहुत अच्छा था किन्तु मेरा दिल ख़ुश नहीं हुआ क्यूँकि तुम्हारे सामने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को रचना बराहीन-ए-अहमदिया उपलब्ध थी और मुझे आशा थी कि तुम उससे बढ़ कर कोई चीज़ लाओगे आर उससे लाभ प्राप्त करोगे। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु का अभिप्रायः यह था बाद में आने वाली नस्लों का काम यही होता है कि पिछली आधार शिला को ऊँचा करते रहें। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि यह एक ऐसी बात है कि जिसे आगे आने वाली पीढ़ियाँ यदि मस्तिष्क में रखें तो स्वयं भी बरकतें तथा कृपाएँ प्राप्त कर सकती हैं तथा क़ौम के लिए भी बरकतों एवं कृपाओं का कारण बन सकती हैं परन्तु अपने पूर्वजों से आगे बढ़ने का प्रयास नक बातों में होना चाहिए, यह नहीं कि चोर का बच्चा यह कोशिश करे कि बाप से बढ़ कर चोर हो, अपितु यह अभिप्रायः है कि नमाज़ी आदमी की संतान यह प्रयास करे कि बाप से बढ़ कर नमाज़ी हो। हज़रत ख़लीफ़ः अव्वल रज़ी. आप रज़ी. की सेहत तथा ज्ञान को जानने के बावजूद इतने उच्च विचार आप रज़ी. के बारे में रखते थे कि यह बच्चा ऐसा है जिसमें इतनी क्षमता है कि यह उच्चतम निबन्ध लिख सकता है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी फ़रमाते हैं कि जब डाक्टरों ने कहा कि मेरी दृष्टि नष्ट हो जाएगी तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मेरे स्वास्थ्य के लिए विशेष रूप से दुआएँ करनी शुरु कर दीं और

साथ ही रोज़े रखने शुरु कर दिए। जब आख़री रोज़े की अफ़तारी करने लगे और रोज़ा खोलने के लिए मुंह में कोइ चीज़ डाली तो एक दम मैंने आखें खोल दीं और मैंने आवाज़ दी कि मुझे दिखाई देने लगा है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बार बार मुझे यही केवल यही फ़रमाते थे कि क़ुर्आन का अनुवाद तथा बुख़ारी हज़रत मौलवी साहब अर्थात हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ी. से पढ़ लो। इसके अतिरिक्त यह भी फ़रमाया था कि कुछ आयुर्वेद भी पढ़ लो क्यूँकि यह हमारी ख़ानदानी विद्या है। अतएव मैंने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ी. से आयुर्वेद भी पढ़ा, क़ुर्आन करीम की तफ़सीर और बुख़ारो भी, कुछ अरबी भाषा की पत्रिकाएँ भी पढ़ने का सुअवसर मिला, अतएव यह मेरे ज्ञान की स्थिति थी।

अल्लाह तआला ने हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. को ज्ञान से ऐसा परिपूर्ण किया कि आप रज़ी. का बावन वर्षीय जीवन इस पर साक्षी है कि चाहे वह दीन के निबन्ध का सवाल है अथवा किसी दुनियावी निबन्ध का, जब भी आप रज़ी. को किसी विषय पर लिखने तथा बोलने को कहा गया, आप रज़ी. ने ज्ञान एवं विवेक क सागर बहा दिए। असंख्य अवसरों पर आप रज़ी. की तक़रीरों को ग़ैरों ने भी अत्यधिक सराहा तथा समाचार पत्रों ने भी ख़बरें जमाईं।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने अपने इलहाम तथा अन्य संकतों के माध्यम से मुझे बता दिया है वह पेशगोई मेरे अस्तित्व में पूरी हो चुकी है और अब इस्लाम के दुश्मनों पर ख़ुदा तआला ने हुज्जत पूरी कर दी है कि इस्लाम ही ख़ुदा तआला का सच्चा धर्म, मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ुदा तआला के सच्चे रसूल और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ख़ुदा तआला के सच्चे अवतार हैं।

अतः यह पेशगोई तो पूरी हुई किन्तु पेशगोई के शब्द इन्शाअल्लाह उस समय तक स्थापित रहेंगे जब तक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का मिशन पूरा न हो जाए और इस्लाम का झंडा पूरे विश्व में न लहराने लग जाए। इस भविष्य वाणी पर हमारे जलसे तभी लाभदायक हैं जब हम इस उद्देश्य को सदैव सम्मुख रखें कि हमने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सम्मान और प्रतिष्ठा को विश्व स्तर पर स्थापित करना है तथा इस्लाम की सच्चाई दुनिया पर ज़ाहिर करके आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के झंडे तले सबको लेकर आना है। आज हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मानने वालों के अतिरिक्त कोई नहीं जिसके द्वारा इस्लाम का झंडा विश्व में दोबारा लहराए, अल्लाह तआला हमें इस काम के करने का सामर्थ्य प्रदान करे।(आमीन)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا
مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ
وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ
يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131